Educational Psychology

B.A. (Hons.) Part-III
Paper-VI Group-B
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D
Deptt of Psychology
D.K. college, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara

BACKWARD-CHILDREN
CAUSE & MEASURES TO EDUCATE THEM

शिक्षा में पिछड़ेपन एक जटिल समस्या है। अक्सर यह देखने को मिलता है, कि कुछ बच्चे शिक्षा-अर्जन में अपने सहपाठियों से पिछड़ जाते हैं। ऐसे बच्चों की संख्या विद्यालय के कुल छात्रों की जनसंख्या के लगभग 10% होती है। शिक्षा में पिछड़ने वाले बच्चों पर किये गये अध्ययनों से ज्ञात होता है, कि "ऐसे बच्चे या तो मंद बुद्धि के होते हैं या किन्हीं अन्य कारणों से अपने वर्ग में पिछड़ जाते हैं।" मनोवैज्ञानिकों द्वारा एवं शिक्षाशास्त्रियों द्वारा पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी कारणों का पता लगाकर उसे दुर करने का प्रयास किया जा रहा है।

इसकी परिभाषा मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रकार से दी है। यहाँ पर बर्ट की परिभाषा को उल्लेखित करना समीचीन होगा जो निम्न प्रकार से है।-

"A backward child is one who, in middle of his school career (i.e. about 10 and a half year) is unable to do the work of class below that which is normal for his age."

अर्थात जो बच्चे अपने स्कूली जीवन के मध्यकाल में (लगभग साढ़े दस वर्ष) में उस वर्ग के शैक्षणिक कार्य को जो उसके उम्र के औसत उपलब्धि वाली कक्षा के नीचे होता है, उसे करने में असमर्थ होता है, ऐसे ही बच्चों को पिछड़ा बच्चा कहा जाता है।"

आजकल मनोवैज्ञानिक पिछड़े बालकों की व्याख्या उसके शिक्षा-लब्धि के आधार पर करने पर जोर दे रहे हैं।

शैक्षिक पिछड़ेपन के कारण

हो सकते हैं। प्रत्येक बालक
पिछड़ेपन एक निजी समस्या है, जिसके कई कारण हो सकते हैं। अतः इसके कारणों का
के लिये इसके अलग-अलग कारण हो सकते हैं। अतः इसके कारणों का लगता है। तथापि
निर्धारण व्यक्तिगत समस्या मानकर ही करना उचित सामान्यतः पिछड़ेपन
यहाँ पर हम इसके कुछ वैसे कारणों का जिक्र करेंगे जो निम्नलिखित हैं:—
के लिये उत्तरदायी होते हैं। पिछड़ेपन के मुख्य कारण

(1.) **सामान्य सहज बुद्धि की कमी**:- यह पिछड़ेपन का सर्वप्रमुख
कारण है। पिछड़े बच्चों की सामान्य बुद्धि उस उम्र के बच्चों की तुलना में
कम होता है। बर्ट ने अपने अध्ययनों का आधार पर बताया कि प्रत्येक ~~जिनकी आयु 70 से कम होते हैं~~
पाँच पिछड़े बच्चों में तीन मंद बुद्धि के होते हैं। बुद्धि का अभाव
बर्ट ने अपने अध्ययनों में पाया कि 95%. पिछड़े बालकों में Mentally retarded
होता है। यहाँ एक बात स्पष्ट करना आवश्यक है कि बुद्धिलब्धि के आधार
एवं Educationally backward बच्चों को Educationally backward
पर एक नहीं माना जाता चाहिए क्योंकि Mentally retard 70 से
बच्चे Border line cases होते हैं जबकि
कम वाले होते हैं। यह जन्मजात होता है। अतः इसका निदान कठिन कार्य है।

(2.) **वातावरण का प्रभाव**:- शिक्षा में पिछड़ेपन का एक कारण
वातावरण का कुप्रभाव भी है। यदि घर-परिवार, पड़ोस, स्कूल आदि
का वातावरण ठीक नहीं है तो इसका खराब प्रभाव बच्चों पर पड़ता है।
परिवार में अगर बच्चों को लाड़प्यार कम मिलता है या तिरस्कृत होते हैं तो
ऐसे बच्चों में संवेगात्मक असुरक्षा की भावना पनपती है जिसके कारण
ऐसे बच्चे पढ़ने में रुचि नहीं लेते हैं और पिछड़ जाता है। पड़ोस
या समाज में असामाजिक तत्वों की बोलबाला होने पर भी संगति के
प्रभाव से बच्चे पढ़ने में रुचि लेना बन्द कर देते हैं और पिछड़ जाते
हैं। स्कूल के वातावरण एवं संगीसाथी का प्रभाव भी उसके लिए जिम्मेवार
है। बर्ट ने अपने एक अध्ययन में पाया कि लगभग 12%. बच्चे
वातावरण के दूषित प्रभाव से शिक्षा में पिछड़ते हैं। इसी तरह लगभग
8%. बच्चे स्कूल तथा शिक्षक की खराब व्यवहार एवं वातावरण से पिछड़ते हैं।

(3) **शारीरिक गड़बड़ी**:- बहुत बार यह देखने को मिलता है कि दिव्यांग
बच्चे आंगिक दोष के कारण शिक्षा में पिछड़ जाते हैं। बर्ट के अनुसार पिछड़े
बच्चों में इनकी सं० 9%. के लगभग होती है। तुतलापन भी इसका एक
वजह है।

उसमें बालकों की शिक्षा लब्धि (E·Q·) निकाली जाती है जिसके लिये उस बालक की शिक्षा आयु (E·A·) का पता लगाना होता है। इस प्रक्रिया में किसी विशेष उम्र के बच्चों के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों का Performance औसत निकाल लिया जाता है जो उस उम्र के बच्चों के लिए Standard E·A· होता है। यदि कोई बालक अपने से कम उम्र के बालकों के लिये निर्धारित मानक के कार्यों का निष्पादन नहीं कर पाता है तो उसका E·A· उम्र के लिहाज से कम होगा। इसी तरह कोई बच्चा यदि अधिक उम्र के मानक के लिए निर्धारित कार्यों का निष्पादन कर लेता है तो उसका E·A· अधिक होगा। इस तरह शिक्षा-लब्धि भी I·Q· की तरह उसी सूत्र से निकाल लेते हैं। जैसे मान लें किसी बच्चे की उम्र 10 वर्ष है। यदि वह 8 वर्ष के बच्चे के लिये निर्धारित मानक से पिछड़ जाता है तब उसका E·A = 8 होगा जिसे निम्न सूत्र से निकालकर उसकी E·Q· ज्ञात किया जा सकता है।—

$$E\cdot Q\ (\text{शिक्षा-लब्धि}) = \frac{E\cdot A\cdot}{C\cdot A} \times 100$$

तो उस बच्चे की $E\cdot Q = \frac{8}{10} \times 100 = 80$

यानि वह बच्चा पिछड़ा बच्चा है। क्योंकि 85 E·Q· से कम वाले बच्चे को शैक्षणिक पिछड़ा बच्चा माना जाता है। बर्ट ने शिक्षालब्धि (E·Q·) के आधार पर मानक को निर्धारित करते हुए कहा है।—

"एक बालक जिसकी शिक्षा-लब्धि (E·Q·) 85 से कम है, पिछड़ा बच्चा कहलाता है।"

बर्ट द्वारा पिछड़े बालकों के लिये दी गई यह परिभाषा काफी अधिक मान्य एवं लोकप्रिय है। आजकल इसी के आधार पर पिछड़े बच्चों की पहचान की जाती है। इसी कड़ी में आगे चलकर बर्ट ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि शहरी क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण विद्यालय के बच्चे अधिक पिछड़ते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि बड़े क्षेत्रफल वाली जगहों में विद्यालय के 10% बच्चे शैक्षिक रूप से पिछड़े होते हैं। इस संदर्भ में किये गये अन्य अध्ययन भी लगभग इसी बात की पुष्टि करते हैं कि विद्यालयों की कुल छात्रों की संख्या में लगभग 10% ऐसे छात्र होते हैं जो शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े होते हैं।

(4) **शारीरिक स्वास्थ्य की गड़बड़ी** :- शारीरिक एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ बच्चे अपने वर्ग में पिछड़ जाते हैं। रुग्ण बच्चे अपने विद्यालय से अनुपस्थित रहने लगते हैं। पाठ्यक्रम एवं पढ़ाई में निरंतरता नहीं होने से पीछे छूट जाते हैं और हतोत्साहित हो जाते हैं। बर्ट ने अपने अध्ययन में पाया कि लगभग 9% बच्चे स्वास्थ्य की गड़बड़ी के कारण पढ़ने में पिछड़ गए थे। Tempramental disturbance के कारण भी लगभग 9% बच्चे पिछड़ गये थे।

(5) **अनियमित रूप से कक्षा में उपस्थिति** :- सामान्य बच्चे भी अगर स्कूल से अनुपस्थित रहते हैं तो वर्ग में पिछड़ जाते हैं। गैरहाजिरी का कारण कुछ भी हो सकता है। शिक्षक का व्यवहार, पिटाई, पाठ्यक्रम को नहीं समझ पाना, शिक्षक द्वारा नहीं समझा पाना, अनुशासनहीनता, प्रेरणा का अभाव, पढ़ाई में अरुचि, हीनभावना, स्कूल का दूषित वातावरण आदि-आदि। वर्ग से अनुपस्थित रहने वाले, विद्यालय से भागनेवाले बच्चे पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं।

(6) **स्कूल से भागना** :- कुछ बच्चे स्कूल से भागते रहते हैं। मटरगश्ती करते हैं; सिनेमा चले जाते हैं। आवारागर्दी करते हैं। कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जो विद्यालय तो जाते हैं पर खास विषय की कक्षा में स्कूल से भाग जाते हैं। नतीजतन उस विषय में पिछड़ जाते हैं।

(7) **स्वभाव सम्बन्धित दोष** :- कुछ अध्ययन यह बताते हैं कि शिक्षा में पिछड़ेपन के लिये मनोवैज्ञानिक कारण भी जिम्मेदार हैं। लगभग 70% बालकों में पिछड़ेपन का कारण मनोवैज्ञानिक होते हैं। ऐसे कारण मुख्यरूप से स्वभावगत होते हैं।

(8) **विशिष्ट कारण** :- पिछड़ेपन के लिए किसी-किसी बालक में कुछ विशिष्ट कारण होते हैं। कुछ बच्चों में किसी विशेष योग्यता का अभाव होता है। फलतः उस विषय में पिछड़ जाते हैं। जैसे मौखिक या संख्यात्मक योग्यता का अभाव, स्मृति दोष आदि।

शैक्षिक पिछड़ेपन को दूर करने के उपाय :-

शिक्षा में पिछड़ेपन को दूर करने के कुछ प्रमुख उपाय मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाशास्त्रियों द्वारा बताये गये हैं, जो निम्नलिखित हैं :—

(1.) वातावरण में सुधार लाकर:- शिक्षा में पिछड़ने के पीछे वातावरणीय
कारकों की एक अहम भूमिका होती है, जिसमें सुधार लाकर इसको दूर
किया जा सकता है। बालकों के पारिवारिक, सामाजिक तथा आर्थिक वातावरण
में सुधार लाकर बच्चों को पढ़ाई से विमुख होने से रोका जा सकता है।
इसके लिए बच्चे को आवश्यक सुविधाओं को उपलब्ध कराना, माता पिता
द्वारा उचित लाड़-प्यार देना, पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराना आवश्यक है।
प्रत्येक माता पिता को बच्चों को समय पर स्कूल भेजना चाहिए, बच्चों की
क्रियाकलापों पर निगाहें रखनी चाहिए। बुरे संगी साथी के सम्पर्क में नहीं
आने दें, उनको खेलने की सुविधा देनी होगी। बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित
करना उनमें रुचि पैदा करना, प्रगति पर नजर रखना अभिभावक एवं शिक्षक
दोनों की जिम्मेवारी होती है।

(2.) शारीरिक दोषों में सुधार लाकर:- विकलांगता या अन्य शारीरिक
दोष भी शिक्षा में पिछड़ेपन के लिए जिम्मेवार है, तुतलाहट वाले बच्चों
को प्रशिक्षित करके ठीक किया जा सकता है। ऐसे बच्चे हीनभावना के चलते
विद्यालय से अनुपस्थित रहते हैं। कम सुननेवाले बच्चों का उचित इलाज
करके या मशीन लगाकर समस्या से निजात दिलाया जा सकता है, इस
तरह शिक्षा में पिछड़ेपन पर कुछ हद तक नियंत्रण लाया जा सकता
है।

(3.) मानसिक योग्यता के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था:- पिछड़े बच्चों
की शिक्षा उनके बुद्धि के या योग्यता के अनुरूप दी जानी चाहिए। वैसे
बच्चों की बुद्धि की जाँच एवं अभिक्षमता की जाँच परीक्षणों द्वारा कर लेनी
चाहिए और उसके अनुरूप पाठ्यक्रम का चयन कराना चाहिए। इसके अलावे
ऐसे बच्चों के लिए अलग वर्ग-व्यवस्था भी की जा सकती है।

(4) व्यक्तिगत ध्यान देकर:- पिछड़े बच्चों पर व्यक्तिगत रूप
से वर्ग में और घर पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वह बालक
अगर किसी खास विषय में पिछड़ रहा है तो उस विशेष विषय को सरल
ढंग से समझाना श्रेयस्कर होगा। इसके अलावे यदि बालक सामान्य
रूप से सभी विषय में पिछड़ रहा है तो उसके लिए व्यक्तिगत ध्यान

देने की आवश्यकता है, ताकि उसके शैक्षिक स्तर में सुधार हो जाए।

(5) उचित परामर्श देकर :- पिछड़ेपन के शिकार बच्चों को उनकी अभिरुचि, अभिक्षमता, कौशल एवं बुद्धि को ध्यान में रखकर शिक्षा दी जाए तो पिछड़ेपन दूर हो सकता है। इसके लिए विद्यालयों में Counsellor की नियुक्ति की जानी चाहिए, जो इस तरह के बच्चों को उचित परामर्श देकर पिछड़ने से उबार सके। इसके लिए Vocational guidance, Vocational Education की व्यवस्था होनी चाहिए क्योंकि Educational guidance की ज्यादा जरूरत होती है।

Counsellor बच्चों को बुरी संगत से निकालने में, विकृतियों के शिकार होने से बचाने में सहायक सिद्ध होता है। बच्चों को अन्य तरह की समस्याओं से निकलकर सफल अभियोजन की कला सिखाने एवं शिक्षा में रुचि पैदा करने में Counsellor की भूमिका काफी कारगर होती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शिक्षा में पिछड़ेपन पिछड़ने वाले बालकों की समस्या बड़ा ही जटिल होती है जिसे दूर कर राष्ट्र के भविष्य को सँवारा जा सकता है। इसके लिए कई कारण जिम्मेवार हैं जिन्हें दूर करने के कुछ प्रमुख उपायों का जिक्र ऊपर किया गया है।

R Singh
21.07.2020
Deptt. of Edu., Dumraon
D.K. College, Dumraon
(Buxar)